

संपादकीय

माना जा रहा था कि कुछ दलों की नाराजगी का असर बैठक पर पड़ सकता है, लेकिन इसमें शामिल होने वाले दलों के बीच कई मुद्दों पर साझा अभियान चलाने पर सहमति बनी। इसमें कोई दोराय नहीं कि विपक्षी दलों के गठबंधन ‘इंडिया’ के सामने फिलहाल बहुस्तरीय चुनौतियां खड़ी हैं और संगठित होकर इनका सामना करने के अलावा कोई

विकल्प नहीं है। मगर पिछले कुछ समय से ‘इंडिया’ के कुछ घटकों ने गठबंधन के दायित्वों से जुड़े जैसे सवाल उठाए हैं, उन पर विचार करके आगे की दिशा तय करने की चुनौती शायद सबके लिए अहम है।गौरतलब है कि कुछ राज्यों में विधानसभा चुनावों और उसके बाद नीट-यूजी 2026 के प्रश्नपत्र लीक होने सहित कई व्यापक महत्त्व के मुद्दों पर जनता के भीतर असंतोष के स्वर तीखे

होने के बीच सोमवार को ‘इंडिया’ गठबंधन की बैठक हुई। माना जा रहा था कि कुछ दलों की नाराजगी का असर बैठक पर पड़ सकता है, लेकिन इसमें शामिल होने वाले दलों के बीच कई मुद्दों पर साझा अभियान चलाने पर सहमति बनी।मुख्य रूप से एसआइआर और चुनावों में वोटों की गड़बड़ी पर सुप्रीम कोर्ट के प्रधान न्यायाधीश को पत्र लिखने के अलावा केंद्रीय शिक्षा मंत्री धर्मेंद्र

प्रधान के इस्तीफे की मांग पर सभी दल सहमत थे। नाजुक आर्थिक स्थिति, बेरोजगारी, महंगाई और समाज के कमजोर तबकों के मुद्दों पर चर्चा के लिए सर्वदलीय बैठक बुलाने की भी मांग की गई।हालांकि तमिलनाडु में विधानसभा चुनाव के नतीजे के बाद कांग्रेस ने जिस तरह सत्ता में आई टीवीके के साथ नया मोर्चा बना लिया, उसके बाद द्रमुक का ‘इंडिया’ में साथ रहना वैसे भी मुश्किल

था। इसी तरह, माकपा ने भी केरल में चुनाव के दौरान कांग्रेस के रुख पर सवाल उठाया।मतभेद के मुद्दों पर संवाद और एक-दूसरे को समान स्तर पर अहमियत देना गठबंधन को मजबूत करने का एक रास्ता हो सकता है, लेकिन यह तभी संभव है जब इसके सभी सदस्य-दलों के भीतर सामूहिक भावना के साथ राजनीतिक चुनौतियों का सामना करने की इच्छाशक्ति हो।जिस समय राजनीतिक

चुनौतियां गहरा रही हों, वैसे में साझा मोर्चा मजबूत करने का रास्ता निकालने के लिए न्यूनतम बिंदुओं पर सहमति के रास्ते तैयार करने की जरूरत है। लोकतंत्र एक मजबूत विपक्ष के मुखर स्वर से ही जीवित रहता है। ऐसे में कुछ मतभेदों के बावजूद ‘इंडिया’ गठबंधन में शामिल दलों के बीच नए सिरे से मैदान में उतरने और हर दो महीने में बैठक करने पर बनी सहमति शायद वक्त का तकाजा भी है।

12 फरवरी 2019 को करोल बाग के अर्पित पैलेस होटल में लगी आग में 17 लोगों की जान गई। जांच में सामने आया कि होटल में अवैध निर्माण हुआ था और सुरक्षा उपकरण पर्याप्त नहीं थे। 2022 में मुंडका की व्यावसायिक इमारत में लगी आग में 27 लोगों की मौत हुई। वहां भी केवल एक निकास मार्ग था और सुरक्षा मानकों की घोर अनदेखी की गई थी। पिछले दिनों दिल्ली के मालवीय नगर स्थित हौजरानी क्षेत्र में हुए भीषण अग्निकांड ने एक बार फिर यह साबित कर दिया कि हमारे यहां हादसे अचानक नहीं होते बल्कि उन्हें पैदा किया जाता है।

बेगुनाह जिंदगियों से खेलता भ्रष्ट तंत्र और दिल्ली के अंतहीन अग्निकांड

(योगेश कुमार गोयल)

21 लोगों की दर्दनाक मौत, दर्जनों घायल, धुएं में घुटती सांसें, तीसरी मंजिल से जान बचाने के लिए छछांग लगाते लोग और बेसमेंट के बाहर बंद पड़ा निकास द्वार, यह केवल एक दुर्घटना नहीं बल्कि प्रशासनिक विफलता, भ्रष्ट व्यवस्था और नियमों की खुलेआम हत्या का भयावह परिणाम था। दुखद यह है कि यह कोई नई कहानी नहीं है। दिल्ली बार-बार अग्निकांडों में जलती है, लोग बार-बार मरते हैं, जांच समितियां बनती हैं, मुआवजे घोषित होते हैं और फिर सब कुछ पहले जैसा हो जाता है। मालवीय नगर के हादसे में जो शुरुआती तथ्य सामने आए, वे किसी भी संवेदनशील व्यक्ति को झकझोर देने वाले थे। जिस भवन में ‘लेमन ग्रीन रेस्टोरेंट’ और ‘मिकास होम्स’ संचालित हो रहे थे, वहां कथित रूप से छह कमरों की अनुमति के बावजूद 25 से अधिक कमरे बनाए गए थे। भवन से निकलने का केवल एक रास्ता था। बेसमेंट में लोगों की मौजूदगी के बावजूद बाहरी गेट पर ताला लगा था। आग लगने के बाद धुआं इतनी तेजी से फैला कि लोग बाहर निकल ही नहीं सके। कुछ लोगों ने तीसरी मंजिल से कूदकर जान बचाने की कोशिश की। यह दृश्य 1997 के उपहार सिनेमा अग्निकांड की भयावह यादों को फिर से ताजा कर गया, जहां बाहर निकलने के रास्ते बंद होने के कारण 59 लोगों की मौत हो गई थी।

दिल्ली में अग्निकांडों का इतिहास बताता है कि हर बड़ी त्रासदी के पीछे कहानी लगभग एक जैसी है, अवैध निर्माण, सुरक्षा मानकों की अनदेखी, भ्रष्टाचार, फर्जी प्रमाणपत्र, बंद निकास द्वार और प्रशासनिक लापरवाही। 13 जून 1997 को हुए उपहार सिनेमा अग्निकांड में 59 लोगों की मौत हुई थी, जो दिल्ली का अब तक का सबसे भयावह अग्निकांड माना जाता है। आग लगने के बाद सिनेमा हॉल में धुआं भर गया और निकास मार्ग अवरुद्ध होने के कारण लोग बाहर नहीं निकल सके। पूरे देश को झकझोर देने वाले इस हादसे के बाद सुरक्षा नियमों को सख्त बनाने की बातें तो बहुत हुईं लेकिन वास्तविकता यह है कि उनसे कोई स्थायी सबक नहीं लिया गया। 31 मई 1999 को लाल कुआं स्थित कैमिकल गोदाम में लगी आग में 57 लोगों की मौत हो गई। उसके बाद भी अवैध गोदामों और रासायनिक इकाइयों पर प्रभावी नियंत्रण नहीं लगाया गया। 8 दिसंबर 2019 को अनाज मंडी की अवैध फैक्टरी में लगी आग में 43 लोगों की मौत हुई। उस समय



भी खुलासा हुआ था कि इमारत में निकास के पर्याप्त रास्ते नहीं थे, सीढ़ियां सामान से भरी थी और खिड़कियों पर लोहे की ग्रिलें लगी थी। जहरीले धुएं ने मजदूरों को सोते हुए ही मौत की नींद सुला दिया।

12 फरवरी 2019 को करोल बाग के अर्पित पैलेस होटल में लगी आग में 17 लोगों की जान गई। जांच में सामने आया कि होटल में अवैध निर्माण हुआ था और सुरक्षा उपकरण पर्याप्त नहीं थे। 2022 में मुंडका की व्यावसायिक इमारत में लगी आग में 27 लोगों की मौत हुई। वहां भी केवल एक निकास मार्ग था और सुरक्षा मानकों की घोर अनदेखी की गई थी। उसी वर्ष गोकुलपुरी की झुग्गी बस्ती में आग से 7 लोगों की जान चली गई। 2024 में अलीपुर की अवैध पेंट फैक्टरी में लगी आग में 11 लोगों की मौत हुई। 2026 में पालम और विवेक विहार में हुए अग्निकांडों में नौ-नौ लोगों की जान गई। अब मालवीय नगर की त्रासदी ने मुक्तकों की सूची में 21 और नाम जोड़ दिए हैं। दिल्ली फायर सर्विस के आंकड़े बताते हैं कि जनवरी 2026 से 27 मई 2026 तक आग की घटनाओं में 45 लोगों की मौत हो चुकी थी। इसके बाद विवेक विहार और मालवीय नगर की घटनाओं को जोड़ दें तो यह संख्या 67 से अधिक हो चुकी है। यह आंकड़ा केवल संख्या नहीं बल्कि उन परिवारों की बर्बादी का दस्तावेज है, जिन्होंने अपने प्रियजनों को खो दिया।

सबसे बड़ा सवाल यह है कि आखिर ऐसी इमारतें बन कैसे जाती हैं? कैसे आवासीय भवनों में व्यावसायिक गतिविधियां चलने लगती हैं? कैसे छह कमरों की अनुमति वाले भवन में 25 कमरे बन जाते हैं? कैसे फायर एनओसी के बिना होटल, रेस्टोरेंट और फैक्ट्रियां वर्षों तक संचालित होती रहती हैं? कैसे चार मंजिल की अनुमति वाले क्षेत्र में छह-सात मंजिलें खड़ी हो जाती हैं? इन सवालों का जवाब किसी जांच आयोग की मोटी रिपोर्ट में नहीं बल्कि भ्रष्टाचार की उस जड़ में छिपा है, जिसने पूरे सिस्टम को खोखला कर दिया है। यदि कोई अवैध इमारत बनती है तो वह एक दिन में नहीं बनती। उसकी नींव पड़ती है, दीवारें उठती हैं, मंजिलें तैयार होती हैं, बिजली के कनेक्शन लगते हैं, पानी के कनेक्शन मिलते हैं और फिर व्यापार शुरू होता है। इस पूरी प्रक्रिया में अनेक सरकारी विभागों की आंखों के सामने सब कुछ होता है। इसलिए यह कहना कि प्रशासन की जानकारी नहीं थी, वास्तविकता से आखें मूंदना होगा। सच यह है कि ऐसी अधिकांश इमारतें प्रशासन और कारोबारियों की मिलीभगत का परिणाम होती हैं। मुख्यमंत्री, मंत्री, सांसद और विधायक घटनास्थल पर पहुंचते हैं। जांच के आदेश दिए जाते हैं, मुआवजे की घोषणाएं होती हैं और कुछ अधिकारियों को निलंबित कर दिया जाता है। लेकिन क्या कभी किसी बड़े अधिकारी को कठोर दंड मिला? क्या कभी किसी विभागीय प्रमुख को जवाबदेह ठहराया गया? क्या कभी

ऐसी कार्रवाई हुई कि भविष्य में कोई अधिकारी नियमों की अनदेखी करने का साहस न कर सके? दुर्भाग्य से जवाब है ‘नहीं’। मालवीय नगर का हादसा भी केवल एक होटल या रेस्टोरेंट की कहानी नहीं है। यह उस पूरे शहरी विकास मॉडल पर प्रश्नचिह्न है, जहां मुनाफा मानव जीवन से अधिक महत्वपूर्ण हो गया है। दिल्ली में हजारों ऐसी इमारतें हैं, जहां फायर सेफ्टी के उपकरण या तो हैं ही नहीं या केवल दिखावे के लिए लगाए गए हैं। अनेक भवनों में इमरजेंसी एग्जिट कागजों में मौजूद हैं लेकिन वास्तविकता में बंद पड़े हैं। कई जगहों पर बेसमेंट का उपयोग पार्किंग की बजाय व्यावसायिक गतिविधियों के लिए किया जा रहा है। संकरी गलियों में बहुमंजिला भवन खड़े हैं, जहां दमकल की गाड़ियां तक नहीं पहुंच सकती। अब समय आ गया है कि केवल जांच और मुआवजे की राजनीति से आगे बढ़ा जाए। दिल्ली में सभी होटलों, गेस्ट हाउसों, रेस्टोरेंटों, अस्पतालों, फैक्ट्रियों और बहुमंजिला इमारतों का व्यापक सुरक्षा ऑडिट कराया जाए। फायर एनओसी की व्यवस्था डिजिटल और पारदर्शी बने। अवैध निर्माण पर केवल जुर्माना नहीं बल्कि तत्काल ध्वस्तीकरण हो। सुरक्षा मानकों की अनदेखी करने वाले भवन मालिकों और जिम्मेदार अधिकारियों पर गैर-इरादतन हत्या नहीं बल्कि कठोर आपराधिक मुकदमे दर्ज हों। जब तक जवाबदेही की तलवार ऊपर तक नहीं पहुंचेगी, तब तक नीचे कोई नहीं सुधरेगा। मालवीय नगर की आग में मारे गए लोग किसी राजनीतिक बहस का हिस्सा नहीं थे, वे आम नागरिक थे, जिनमें महिलाएं थी, विदेशी नागरिक थे, मरीजों के परिजन थे और बेहतर जीवन की उम्मीद लेकर वहां ठहरे हुए लोग थे। आज जरूरत शोक व्यक्त करने से ज्यादा आत्ममंथन की है। उपहार कांड से लेकर मालवीय नगर तक लगभग तीन दशक बीत चुके हैं लेकिन व्यवस्था की मानसिकता नहीं बदली। यदि इस बार भी कुछ दिनों के शोर-शराबे के बाद सब कुछ सामान्य हो गया तो यकीन मानिए, अगला अग्निकांड केवल समय का प्रश्न होगा। तब फिर वही सवाल गुंजाया कि आखिर बेगुनाह लोगों की जान से खेलते इस सिस्टम का जिम्मेदार कौन है? (लेखक 36 वर्षों से पत्रकारिता में सक्रिय वरिष्ठ पत्रकार और ‘सागर से अंतरिक्ष तक’ भारत की रक्षा क्रांति’ सहित कई चर्चित पुस्तकों के लेखक हैं।) इस लेख में लेखक के अपने विचार हैं।)

नरेंद्र मोदी के 12 साल- भरोसे के हकीकत में बदलने का दौर

(डॉ. राजेन्द्र प्रसाद शर्मा)

विपक्षी पार्टियां द्वारा लगातार देश और विदेश में अभियान चलाने के बावजूद प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी रैंकिंग या स्वीकार्यता के मामले में वैश्विक नेताओं से बहुत आगे हैं। 68 प्रतिशत स्वीकार्यता नरेन्द्र मोदी की है जबकि अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप की स्वीकार्यता रैंक लगातार नेगेटिव जा रही है। फालोवर्स में भी नरेन्द्र मोदी सबसे आगे हैं। दुनिया का संभवतः हमारा ही देश होगा जहां देश के बाहर भारत की छवि खराब करने में कोई कोर कसर नहीं छोड़ी जा रही उसके बावजूद प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की यह स्वीकार्यता निश्चित रूप से भारत ही नहीं दुनिया के अन्य देशों में भी उनकी लोकप्रियता और सर्वमान्यता को दर्शाती है। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी सबसे लंबे समय तक प्रधानमंत्री पद पर रहने वाले चुनिंदा प्रधानमंत्री बन गए हैं। चुनिंदा इसलिए कि देश में पहले लोकसभा चुनाव 1952 में हुए पर पं. नेहरु 1947 से 1952 तक भी प्रधानमंत्री रहे। लगातार 12 साल कोई कम नहीं होते और वह भी लगातार 12 साल। सबसे बड़ी बात यह कि इस दौरान नरेन्द्र मोदी सरकार द्वारा ऐसे साहसिक निर्णय किये गये हैं जिनकी कल्पना भी नहीं की जा सकती थी। माना तो यही जाता था कि कश्मीर में धारा 370 और 35 ए हटाना, राममंदिर का निर्माण, डिजिटल क्रांति, वैश्विक नेतृत्व, नोटबंदी, एक देश एक कर, घर घर शौचालय, घर घर कचरा संग्रहण, रक्षा उपकरणों का निर्यात, किसान सम्मान, मेक इन इंडिया, इंडिया फर्स्ट, बड़ी अर्थ व्यवस्था, तेजी से ढांचागत विकास, डिजिटल भुगतान, नक्सलवाद की नेस्तनाबूदी, आत्मनिर्भर भारत, परिवहन क्षेत्र में ढांचागत बदलाव आदि आदि समय समय पर की जाने वाली घोषणाएं केवल चुनाव जीतने के जुमले हैं पर लगभग असंभव माने जाने वाले यह काम आज धरातल पर उतरना सबसे बड़ी उपलब्धी मानी जा सकती है। इससे सबके साथ ही सबसे आश्चर्य जनक बात यह है कि लाख विरोध के बावजूद विपक्ष आज हाशिये में चला गया है।

विपक्षी पार्टियां द्वारा लगातार देश और विदेश में अभियान चलाने के बावजूद प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी रैंकिंग या स्वीकार्यता के मामलों में वैश्विक नेताओं से बहुत आगे हैं। 68 प्रतिशत स्वीकार्यता नरेन्द्र मोदी की है जबकि अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप की स्वीकार्यता रैंक लगातार नेगेटिव जा रही है। फालोवर्स में भी नरेन्द्र मोदी सबसे आगे हैं। दुनिया का संभवतः हमारा ही देश होगा जहां देश के बाहर भारत की छवि खराब करने में कोई कोर कसर नहीं छोड़ी जा रही उसके बावजूद प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की यह स्वीकार्यता निश्चित रूप से भारत ही नहीं दुनिया के अन्य देशों में भी उनकी लोकप्रियता और सर्वमान्यता को दर्शाती है। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी सबसे लंबे समय तक प्रधानमंत्री पद पर रहने वाले चुनिंदा प्रधानमंत्री बन गए हैं। चुनिंदा इसलिए कि देश में पहले लोकसभा चुनाव 1952 में हुए पर पं. नेहरु 1947 से 1952 तक भी प्रधानमंत्री रहे। लगातार 12 साल कोई कम नहीं होते और वह भी लगातार 12 साल। सबसे बड़ी बात यह कि इस दौरान नरेन्द्र मोदी सरकार द्वारा ऐसे साहसिक निर्णय किये गये हैं जिनकी कल्पना भी नहीं की जा सकती थी। माना तो यही जाता था कि कश्मीर में धारा 370 और 35 ए हटाना, राममंदिर का निर्माण, डिजिटल क्रांति, वैश्विक नेतृत्व, नोटबंदी, एक देश एक कर, घर घर शौचालय, घर घर कचरा संग्रहण, रक्षा उपकरणों का निर्यात, किसान सम्मान, मेक इन इंडिया, इंडिया फर्स्ट, बड़ी अर्थ व्यवस्था, तेजी से ढांचागत विकास, डिजिटल भुगतान, नक्सलवाद की नेस्तनाबूदी, आत्मनिर्भर भारत, परिवहन क्षेत्र में ढांचागत बदलाव आदि आदि समय समय पर की जाने वाली घोषणाएं केवल चुनाव जीतने के जुमले हैं पर लगभग असंभव माने जाने वाले यह काम आज धरातल पर उतरना सबसे बड़ी उपलब्धी मानी जा सकती है। इससे सबके साथ ही सबसे आश्चर्य जनक बात यह है कि लाख विरोध के बावजूद विपक्ष आज हाशिये में चला गया है।

कश्मीर से धारा 370 और 35 ए की समाप्ति हो चुकी है। दुनिया के किसी देश ने खुलकर इसका विरोध करने



की हिम्मत नहीं दिखाई। बाबरी मस्जिद के स्थान पर राममंदिर का निर्माण हो चुका है तो तीन तलाक, सीएए, यूसीसी और यहां तक कि सर्जीकल स्ट्राइक के बाद ऑपरेशन सिन्दुर तक पर दुनिया के किसी देश की भारत के खिलाफ खुलकर आवाज उठाने की हिम्मत नहीं हो पाई है। आज अर्थ व्यवस्था में जिस तेजी से बदलाव आया है और चौथी बड़ी अर्थ व्यवस्था बनने के बाद अब तीसरी बड़ी अर्थ व्यवस्था बनने की ओर तेजी से कदम बढ़ चुके हैं। जनधन योजना के समय जिस तरह से आलोचना का दौर चला था आज भुगतान में डिजिटलीकरण में इसकी बड़ी भूमिका तय हो चुकी है। जो लगभग असंभव माना जा सकता था वह आज डिजिटल भुगतान के माध्यम से संभव हो पाया है और पांच रु. के टमाटर का भुगतान भी सब्जीवाले तक को यूपीआई से आसानी से होने लगा है। सरकारी सामाजिक सुरक्षा योजना के भुगतान, पेंशन, अनुदान आदि आज सीधे खातों में जाने लगे हैं। यह किसी दिवा स्वप्न से कम नहीं है। आईपीसी सीपीसी में बदलाव

किया जा चुका है। तो जीएस्टी में लाख कमियां गिाने के बावजूद आज समूचा देश एक देश एक कर के छते के नीचे आ चुका है। बुनियादी ढांचे में तेजी से बदलाव आया है। आज वंदे भारत और नमो भारत ट्रेन चलने लगी है तो 33 किमी प्रतिदिन हाईवे का निर्माण हो रहा है। एक्सप्रेस हाईवे से आवागमन आसान हुआ है। आयुष्मान योजना से 50 करोड़ लोगों को जोड़ा जा चुका है तो सस्ती जेनेरिक दवाओं की उपलब्धता का नेटवर्क विस्तारित किया गया है। आज 98 प्रतिशत घरों से घर घर कचरा संग्रहण होने लगा है तो अब घर घर में शौचालय बन चुके हैं। कोरोना के दौरान हमारे प्रयासों को सारी दुनिया द्वारा सराहा गया यहां तक कि कोरोना के दौरान जीवन रक्षक की भूमिका में भारत ने भूमिका निभाई। किसानों की आय में बढ़ोतरी के ठोस प्रयास हुए हैं तो किसान सम्मान निधि के माध्यम से किसानों को उनका आत्मसम्मान उपलब्ध कराया गया है। एमएएसपी व्यवस्था में सुधार हुए हैं तो खेती किसानों के क्षेत्र में बदलाव छाप दिखाई दे रहा है। मेक इन इंडिया और इंडिया फर्स्ट भी आज साकार होता दिखाई दे रहा है। आज हम रक्षा उपकरणों का निर्यात करने लगे हैं तो सहस्त्रबलों के आधुनिकीकरण और निर्णय की स्वतंत्रता का परिणाम है कि आज सेनाएं आत्मगौरव के साथ आगे बढ़ रही हैं। आज देश आत्म निर्भर भारत की दिशा में तेजी से आगे बढ़ रहा है।

जहां तक कूटनीतिक स्तर पर सफलता की बात है तो भारत आज पिछलग्नु देशों में नहीं बल्कि दुनिया का नेतृत्व करने की स्थिति में आ गया है। अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप लाख प्रयासों के बावजूद भारत के खिलाफ कुछ खास

कर नहीं पा रहे हैं। पाकिस्तान के पक्ष में आज तुरकिया जैसे एकाध को छोड़कर कोई देश बोलने की स्थिति में नहीं है। मालदीव को नरेन्द्र मोदी के एक फोटो ट्वीट ने सबक सीखा दिया तो दूसरे देश भी भारत की ताकत को समझने लगे हैं।

खेर यह सब होते हुए भी नरेन्द्र मोदी सरकार के सामने अभी चुनौतियां कम नहीं हैं। रोजगार सृजन, प्रति व्यक्ति आय में अंतर, शिक्षा व स्वास्थ्य सेवाओं में सुधार, जल जीवन मिशन के बावजूद पेयजल की सहज उपलब्धता, खेती की बरसात पर निर्भरता, परिसीमन आदि ऐसे बहुत से मुद्दे हैं जिन पर ठोस काम किया जाना है। देश में जिस तरह से पेपर लीक होने के मामलों सामने आये हैं इससे युवाओं में निराशा हुई है उसे दूर करने की चुनौती सामने है तो स्टार्ट अप और कौशल विकास के बावजूद बेरोजगारी की दर अभी भी चिंतनीय स्तर पर है। साइबर क्राइम और गैमिंग जैसी नई चुनौतियां तो सोशल मीडिया के दुरुपयोग और अत्यधिक उपयोग के साइड इफेक्ट आदि अनेक समस्याएं समाधान चाहती है। देश आज तेजी से एक देश एक चेहरे एक चुनाव के धरातल पर उतरने का इंतजार कर रहा है। रियूवल एनर्जी पर बहुत कुछ हासिल करने के बावजूद अमेरिका ईरान युद्ध के कारण जिस तरह से तेल और एलपीजी का संकट आया है इसका भी दीर्घकालीन समाधान खोजना जाना है। हॉलांक किसानों अनवरत और नियमित प्रक्रिया में पर दीर्घकालीन योजनाओं से आसानी से निपटा जा सकता है।

इस सबके बावजूद दिशावसियों को नरेन्द्र मोदी के प्रति पूरा भरोसा है। यह कारण है कि विपक्ष की लाख आलोचनाओं के बावजूद नरेन्द्र मोदी की स्वीकार्यता और भरोसे व उनके आत्मविश्वास में किसी तरह की कमी नहीं आई है। सौ टके की बात कही जाएं तो नरेन्द्र मोदी की अपार उपलब्धियों के बावजूद चुनौतियां भी अमार हैं और सबसे अच्छी बात यह कि देशवासियों का उनपर भरोसा (भ्रूस है और वैश्विक स्वीकार्यता भी सबसे अधिक है। (इस लेख में लेखक के अपने विचार हैं।)

दहलीज़ लांघती बेटियां, स्कूल बैग से ज़्यादा भारी है सामाजिक अपेक्षाओं का बोझ

(अतुल मोर्य)

भोर की पहली धूप के साथ जब लड़कियां घर की देहरी लौंघती हैं, तो उनके कंधों पर स्कूल बैग से कहीं अधिक भारी बोझ होता है। राजस्थान के एक छोटे कस्बे की प्रिया हो, या दिल्ली के किसी सरकारी विद्यालय की रोशनी; सुबह छह बजे उठकर, रसोई में चाय बनाकर, छोटे भाई-बहनों को तैयार करके जब वे बस की ओर दौड़ती हैं, तो यह दौड़ केवल विद्यालय तक नहीं होती। वे उस संसार में कदम रखती हैं जो उनसे कहता है- प्रश्न करो, आत्मविश्वास रखो, अपने सपनों को नाम दो।

कक्षाओं में वे संविधान की समता पढ़ती हैं, विज्ञान में तर्क के सूत्र सीखती हैं, भाषा में अपनी अभिव्यक्ति को धार देती हैं। परंतु संख्या की छाया के साथ जब वही लड़कियां घर की ओर लौटती हैं, तो वे एक बिल्कुल भिन्न दुनिया में प्रवेश करती हैं।

यह दुनिया किताबों की भाषा नहीं बोलती। यहां आवाज़ का तेज़ होना असंस्कार माना जाता है, हँसी की ऊँचाई मापी जाती है। एक ओर कक्षा में शिक्षिका कहती हैं- बेठा, बोलो, संकोच मत करो; दूसरी ओर घर में दादी ठोकती हैं- इतनी जोर से हँसते नहीं, लड़की हो। यही वह अदृश्य विभाजन रेखा है जिसे हम प्रायः दैनंदिन जीवन की सामान्यता मानकर अनदेखा कर जाते हैं।

स्वीकृति के भीतर की अदृश्य सीमा समाज अब लड़कियों की पढ़ाई का उस तरह विरोध नहीं करता जैसा कभी करता था। राष्ट्रीय परिवार स्वास्थ्य सर्वेक्षण (एनएफएचएस -5) के अनुसार देश में 15-24 वर्ष की आयु की महिलाओं में साक्षरता दर 90 प्रतिशत तक पहुँच गई है यह निस्संदेह एक ऐतिहासिक उपलब्धि है। किंतु इस स्वीकार्यता की परतों के नीचे भी एक अदृश्य रेखा खिंची रहती है। मार्च 2025 में बिहार के दानापुर की खुशबू कुमारी की कहानी पूरे देश ने देखी, जिसने कक्षा 10 में 500 में से 399 अंक लाए, पर परिवार ने विज्ञान की जगह कला वर्ग में दाखिला दिलाया। खुशबू डॉक्टर बनना चाहती थीं।

यह कोई अपवाद नहीं है। (उच्च शिक्षा की अखिल भारतीय सर्वेक्षण रिपोर्ट) 2022-23 के आँकड़े बताते हैं कि उच्च शिक्षा में लड़कियों का नामांकन अनुपात बढ़ा है, परंतु अनीनियरिंग, प्रौद्योगिकी और कंप्यूटर विज्ञान में उनकी उपस्थिति अभी भी एक-तिहाई से कम है। शिक्षण, परिचर्या

और मानविकी, ये क्षेत्र इसलिए सामाजिक रूप से मान्य हैं क्योंकि इनमें देखभाल और सेवा का भाव दिखता है और समाज स्त्री को इन्हें भावों से जोड़कर देखने का आदी है। अभियांत्रिकी, न्यायशास्त्र, राजनीति, रक्षा-सेवाएँ या वैज्ञानिक शोध जैसे क्षेत्रों में जाने वाली लड़कियाँ अभी भी सामाजिक कल्पनाशीलता की परिधि से बाहर हैं। जो इन क्षेत्रों की ओर जाती हैं, उन्हें प्रत्यक्ष प्रतिबंध से अधिक सूक्ष्म असहजताओं से गुजरना पड़ता है जैसे कि सेना में जाओगी, फिर शादी कौन करेगा? या वकालत में घर कब सँभालोगी? जैसे प्रश्न उनके सपनों को ‘यथार्थ’ की कसौटी पर बार-बार परखते हैं। धीरे-धीरे लड़की स्वयं भी यह आत्मसात करने लगती है कि उसके सपनों की एक ‘सामाजिक सीमा’ है। उसे आगे बढ़ने की स्वतंत्रता है परंतु केवल उतनी, जितनी से स्थापित सामाजिक संरचना असहज न हो।

शिक्षाशास्त्री प्रो. कृष्ण कुमार की दृष्टि में समाज स्त्री को केवल विधि-निषेधों से नहीं, बल्कि सांस्कृतिक संकेतों की एक सूक्ष्म भाषा से गढ़ता है। पहनावा, चाल, आवाज़ का आरोह-अवरोह इत्यादि, ये सब मिलकर एक अधोषिit पाठ्यक्रम रचते हैं। इसकी अभिव्यक्ति कभी-कभी बेहद ठोस होती है। दिल्ली के कुछ विश्वविद्यालयों में एक शोध के दौरान छात्राओं से पूछा गया कि वे कक्षा में प्रश्न पूछने से क्यों हिचकती हैं।

उत्तर चौंकाने वाले थे कि लड़के हँसते हैं, प्राध्यापक सीरियसली नहीं लेते, घर में माँ कहती हैं ज्यादा बोलना अच्छा नहीं। ये तीनों उत्तर तीन अलग-अलग दुनियाओं से आए थे परंतु एक की निष्कर्ष पर मिलते थे - तुम्हारी आवाज़ का एक निर्धारित दायरा है। शायद इसीलिए बहुत-सी लड़कियाँ कम आयु में ही दो भिन्न संसारों के बीच एक अदृश्य सेतु बनाना सीख लेती हैं। विद्यालय में वे आत्मविश्वास से बोलती हैं, घर में संयम धारण करती हैं। वे जानती हैं कि किस परिसर में कितनी हँसी स्वीकार्य है, और कहीं मौन ही समझदारी है। मनोविज्ञान इस प्रक्रिया को ‘कोड-स्विचिंग’ कहता है। कोड-स्विचिंग वह मानसिक श्रम है जो व्यक्ति को एक संदर्भ से दूसरे संदर्भ में जाते ही अपना व्यवहार, भाषा और अभिव्यक्ति बदलनी पड़ती है। यह श्रम अदृश्य है, थकाने वाला है, और अनिवार्यतः असमान क्योंकि यह लड़कियों से ही अपेक्षित है, लड़कों से नहीं।

महिला टी20 विश्व कप

इन गेंदबाजों के नाम है सर्वाधिक विकेट लेने का रिकॉर्ड

नई दिल्ली। महिला टी20 विश्व कप 2026 की शुरुआत 12 जून से हो रही है। इंग्लैंड में आयोजित हो रहा यह इवेंट टी20 विश्व कप का 10वां संस्करण है। आइए देखते हैं कि पिछले 9 संस्करणों में किन दस गेंदबाजों ने सबसे ज्यादा विकेट लिए हैं।

- महिला टी20 विश्व कप के इतिहास में सबसे ज्यादा विकेट लेने का रिकॉर्ड ऑस्ट्रेलिया की तेज गेंदबाज मेगान स्कट के नाम है।
- मेगान ने 2016 से 2024 के बीच खेले 29 मैचों में 48 विकेट लिए हैं।
- दक्षिण अफ्रीका की शबनम इस्माइल दूसरे नंबर पर हैं। इस्माइल ने 2009 से 2023 के बीच 32
- 2018 से 2024 के बीच 18 मैचों में केर ने 32 विकेट लिए हैं।
- दक्षिण अफ्रीका की मारिजेन कैप और वेस्टइंडीज की डियान्ना डॉटिन संयुक्त रूप से सातवें स्थान पर हैं।
- कैप ने 2009 से 2024 के बीच 32 मैचों में 31 और डॉटिन ने 2009 से 2024 के बीच 35 मैचों में 31 विकेट लिए हैं।



- मैचों में 43 विकेट लिए हैं।
- इंग्लैंड की ए श्रूबसोले तीसरी सफल गेंदबाज हैं। 2010 से 2020 के बीच 27 मैचों में उन्होंने 41 विकेट लिए।
- चौथे नंबर पर सर्वाधिक टी20 विश्व कप मैच खेलने वाली ऑस्ट्रेलिया की एलिस पेरी हैं।
- पेरी ने 2009 से 2024 के बीच 47 मैचों में 40 विकेट लिए हैं।
- वेस्टइंडीज की स्टेफनी टेलर ने 2009 से 2024 के बीच 35 मैचों में 33 विकेट लिए हैं, वे पांचवीं सफल गेंदबाज हैं।
- छठे नंबर पर न्यूजीलैंड की एमिलिया केर हैं।
- इंग्लैंड की सोफी एक्लेस्टन, न्यूजीलैंड की सोफी डिवाइन संयुक्त रूप से आठवें स्थान पर हैं।
- एक्लेस्टन ने 2018 से 2024 के बीच 18 मैच में 29 और डिवाइन ने 2009 से 2024 के बीच 38 मैच में 29 विकेट लिए हैं।
- भारत की पूनम यादव, वेस्टइंडीज की ए फलेचर और पाकिस्तान की निदा डार संयुक्त रूप से नौवें स्थान पर हैं।
- पूनम ने 2014 से 2020 के बीच 18 मैचों में 28, फलेचर ने 2016 से 2024 के बीच 23 मैचों में 28 और डार ने 2010 से 2024 के बीच 33 मैचों में 28 विकेट लिए हैं।

फीफा वर्ल्ड कप में दिखेगा भारतीय मूल के 4 खिलाड़ियों का रहेगा

नई दिल्ली (एजेंसी)। फीफा वर्ल्ड कप 2026: भारतीय फुटबॉल फैंस वषों से अपनी नेशनल टीम के फुटबॉल वर्ल्ड कप में खेलने का सपना देख रहे हैं. हालांकि उनका या सपना कब पूरा होगा इस पर कुछ नहीं कहा जा सकता है लेकिन बतौर खिलाड़ी भारतीय फैंस का ये सपना पूरा होने वाला है. क्योंकि फीफा वर्ल्ड कप 2026 में चार भारतीय मूल के खिलाड़ी अपना जलवा दिखाने के लिए तैयार हैं। ये चारों खिलाड़ी भले ही अपने-अपने देश - न्यूजीलैंड, ऑस्ट्रेलिया, कतर और डीआर कांगो के लिए खेलेंगे, लेकिन साथ ही वो भारतीय विरासत की झलक भी दिखाएंगे. यह चार खिलाड़ी - सरप्रत सिंह, सैमुअल मौतौसामी, निशान वेतुपिल्ले और तहसीन मोहम्मद हैं. आइए इन चार खिलाड़ियों पर एक नजर डालते हैं।



तहसीन मोहम्मद जमशेद (कतर) - 19 साल के तहसीन मोहम्मद का जन्म कतर की राजधानी दोहा में हुआ. हालांकि उनके माता-पिता केरल के कन्नूर से हैं. जो 2006 में कन्नूर से कतर चले गए थे. खास बात यह है कि जमशेद फीफा वर्ल्ड कप में खेलने वाले पहले भारतीय

पासपोर्ट धारक हैं. उनके पास भारतीय पासपोर्ट और कतर का खास 'मिशन पासपोर्ट' दोनों हैं।तहसीन के पिता जमशेद कालीकट विश्वविद्यालय के पूर्व खिलाड़ी थे. तहसीन ने दोहा स्थित एग्मायर अकादमी में अपने फुटबॉल कौशल को निखारा और कतर स्टार्स लीग में खेलने वाले भारतीय मूल के पहले खिलाड़ी बने. अभी वह अल दुहैल एससी के लिए खेलते हैं। विंगर तहसीन ने फीफा विश्व कप के एशियाई क्वालीफायर

ग्रुप मैच के दौरान 2024 में अफगानिस्तान के खिलाफ अंतरराष्ट्रीय फुटबॉल में पदार्पण किया. उन्होंने जिम्बाब्वे (2025) और आयरलैंड (2026) के खिलाफ दो अंतरराष्ट्रीय मैत्री मैचों में भी हिस्सा लिया है. लेकिन उन्होंने अभी तक कोई गोल नहीं किया है।



श्रेयस अय्यर नहीं खेले, इशान की पारी से मुंबई फाल्कन्स को मिली जीत

वैभव का साधारण प्रदर्शन, मिला एक विकेट

नई दिल्ली। टी20 मुंबई 2026 का 19वां लीग मैच सोबो मुंबई फाल्कन्स और नॉर्थ मुंबई पैथर्स के बीच खेला गया। इस मुकाबले में मुंबई फाल्कन्स को इशान मूलचंदानी की शानदार अर्धशतकीय पारी के दम पर 7 विकेट से जीत मिली। इस जीत के साथ इस टीम के कूल 6 अंक हो गए, लेकिन ये टीम सेमीफाइनल में नहीं पहुंच पाई।

इशान मूलचंदानी ने खेली 65 रन की पारी

इशान ने अपनी टीम यानी मुंबई फाल्कन्स के लिए शानदार अर्धशतकीय पारी खेली और 45 गेंदों पर 65 रन ठोके। इस दौरान उन्होंने 5 छक्के और 2 चौके भी लगाए और अपनी टीम की जीत में बड़ी भूमिका निभाई। गौतम भरत वाघेला ने भी कमाल की पारी खेली और 30 गेंदों पर 45 रन बनाकर नाबाद रहे और टीम को जीत दिलाकर ही पवेलियन वापस लौटे। नॉर्थ मुंबई पैथर्स के लिए वैभव माली ने 4 ओवर में 30 रन देकर एक विकेट लिए जबकि राहुल और प्रतीक को भी एक-एक विकेट मिले।

इस मुकाबले में नॉर्थ मुंबई पैथर्स के खिलाफ सोबो मुंबई फाल्कन्स के बॉलर मयूरेश टंडेल ने 4 ओवर में 30 रन देकर 4 विकेट लिए। नॉर्थ मुंबई पैथर्स के लिए अभिज्ञान कुडु ने 21 गेंदों पर 45 रन की सबसे बड़ी पारी खेली। इसके अलावा अनीस चौधरी ने 23 गेंदों पर 32 रन बनाए जबकि कप्तान हादिक तामोरे नहीं चल पाए और ओपन करते हुए 4 गेंदों पर एक बनाकर चलते बने। सिद्धार्थ आकर ने 16 रन जबकि आर्यराज संजय निकम के बल्ले से 17 रन निकले।

श्रीलंका दौरे पर 9 साल बाद जाएगी टीम इंडिया

WTC 2025-27 का हिस्सा होंगे टेस्ट मैच



नई दिल्ली। भारतीय टीम ने हाल ही में अफगानिस्तान के खिलाफ टेस्ट मैच खेला था और पारी व 300 रन से बेहतरीन जीत दर्ज की थी। मगर यह टेस्ट वर्ल्ड टेस्ट चैंपियनशिप 2025-27 का हिस्सा नहीं था। अब टीम इंडिया 15 अगस्त 2026 से एक बार फिर अपना झुझड़ 2025-27 का अभियान शुरू करेगी। इस संस्करण में यहां से भारत के लिए हर मुकाबले में जीत दर्ज करना लगभग जरूरी है। भारतीय टीम अगस्त में श्रीलंका का दौरा करेगी। इस दौरे के लिए दो मैचों की टेस्ट सीरीज के शेड्यूल की जानकारी क्रिकबज ने शेयर की है। इस दौर पर टीम इंडिया दो टेस्ट मैच खेलेगी। 9 साल बाद भारतीय टीम श्रीलंका का दौरा करेगी। आखिरी बार 2017 में टीम इंडिया ने विराट कोहली की कप्तानी में श्रीलंका का दौरा किया था और 3-0 से टेस्ट सीरीज जीती थी। अब 9 साल बाद भारतीय टीम शुभमन गिल की कप्तानी में श्रीलंका का दौरा करेगी।

श्रीलंका दौरे के लिए टीम इंडिया का शेड्यूल

पहला टेस्ट: 15-19 अगस्त 2026, गॉल

दूसरा टेस्ट: 23-27 अगस्त 2026, कोलंबो (SSC)

WTC अंकतालिका में भारत-श्रीलंका का हाल

वर्ल्ड टेस्ट चैंपियनशिप में मौजूदा हाल की बात करें तो श्रीलंका टीम अंकतालिका में तीसरे स्थान पर मौजूद है। श्रीलंकाई टीम ने अभी तक 2 मैच खेले हैं जिसमें से एक में उसे जीत मिली है और एक मैच ड्रॉ हुआ है। श्रीलंका का विनिंग पर्सेंटाइल 66.67 प्रतिशत है। जबकि भारतीय टीम अंकतालिका में बांग्लादेश से भी नीचे छठे स्थान पर है। भारत की साउथ अफ्रीका के खिलाफ पिछली सीरीज में घर पर बुरी तरह हाल झेलनी पड़ी थी। भारतीय टीम ने मौजूदा संस्करण में 9 मैच खेले हैं जिसमें से 4-4 मैच टीम ने जीते और हारे हैं। एक मैच ड्रॉ हुआ है। भारत का विनिंग पर्सेंटाइल 48.15 प्रतिशत है। भारतीय टीम को यहां से अगर फाइनल में जगह बनानी है तो श्रीलंका, न्यूजीलैंड दौरे के बाद ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ घरेलू सीरीज (बॉर्डर-गावस्कर ट्रॉफी) में जीत दर्ज करनी होगी।

इंडिया ए ने अफगानिस्तान को दिया था 349 रन का लक्ष्य



● वैभव सूर्यवंशी की शानदार बल्लेबाजी

दांबुला (एजेंसी)। इंडियाए और अफगानिस्तान, श्रीलंका में खेले जा रहे ट्राई नेशन सीरीज के दूसरे मैच में आमने सामने हैं. दांबुला के रंगिरी दांबुला अंतरराष्ट्रीय स्टेडियम में टॉस हारकर पहले बल्लेबाजी करते हुए इंडिया ए ने 49 ओवर में 9 विकेट खोकर 349 रन बनाए हैं. जिसमें वैभव (44), प्रभसिमरन (84), गायकवाड़ (66), तिलक वर्मा (66) और शेगडे (40) ने अहम पारियां खेलीं. वहीं अफगानिस्तान की तरफ से अब्दुल्लाह अहमदजई ने 5 और फरमानजुल्लाह ने 3 विकेट हासिल किए। बारिश रुकने के बाद मैच दोबारा शुरू हो गया था, लेकिन छर्रू की वजह से अब अफगानिस्तान ए को 38 ओवर में 294 रनों का टारगेट मिला है. भारत ने 49 ओवर में 9 विकेट पर 349 रन बनाए थे।

भारत के लिए शानदार टेस्ट डेब्यू

7 विकेट लेकर बने प्लेयर ऑफ द मैच; अब मानव

सुतार को इंग्लैंड की काउंटी टीम ने किया साइन

नई दिल्ली। भारतीय टीम के लिए हाल ही में अफगानिस्तान के खिलाफ ऐतिहासिक टेस्ट डेब्यू के बाद मानव सुतार को इंग्लैंड के एक काउंटी क्लब ने साइन किया है। इंग्लिश काउंटी क्लब वार्विकशायर ने भारतीय खिलाड़ी



को मौजूदा काउंटी चैंपियनशिप के सीजन के अगले दो राउंड के लिए साइन किया है। इसकी घोषणा क्लब के द्वारा बुधवार को की गई। मानव ने अफगानिस्तान के खिलाफ अपने डेब्यू टेस्ट में कुल सात विकेट दोनों पारियों में झटके थे और प्लेयर ऑफ द मैच भी बने थे। वार्विकशायर ने उन्हें साइन करने के बाद आधिकारिक बयान जारी करते हुए कहा, 'वार्विकशायर काउंटी क्रिकेट क्लब मानव सुतार को शॉर्ट-टर्म कॉन्ट्रैक्ट पर साइन करने के बाद काफी उत्साहित है। भारतीय इंटरनेशनल क्रिकेटर मौजूदा काउंटी चैंपियनशिप के

अगले दो राउंड में सेलेक्शन के लिए उपलब्ध रहेंगे।' मानव सुतार 12 जून को वार्विकशायर और यॉर्कशायर के बीच होने वाले मैच में चयन के लिए उपलब्ध रहेंगे। इसके बाद अगले हफ्ते समरसेट के खिलाफ मैच के लिए भी वह मौजूद रहेंगे। क्लब के परफॉमेंस डायरेक्टर जेम्स थॉमस ने भी मानव का टीम में स्वागत किया। वहीं भारतीय गेंदबाज ने भी क्लब के लिए आने वाले दिनों में खेलने के लिए उत्सुकता जाहिर की।

बेन स्टोक्स को बीच सीरीज टीम से किया गया बाहर

जो रूट करेंगे कप्तानी; जोफ्रा आर्चर की भी हुई एंट्री

नई दिल्ली। इंग्लैंड के टेस्ट कप्तान बेन स्टोक्स और साथी गेंदबाज गस अटकिंसन के ऊपर नाइट क्लब मामले के बाद तलवार लटक रही है। इसी के चलते न्यूजीलैंड के खिलाफ सीरीज के बीच दूसरे मुकाबले से पहले दोनों को टीम से बाहर कर दिया गया। स्टोक्स की जगह जो रूट को अंतरिम कप्तान बनाने की घोषणा की गई है। इंग्लैंड क्रिकेट बोर्ड की तरफ से बुधवार (10 जून) को यह जानकारी शेयर की गई। इंग्लैंड क्रिकेट बोर्ड ने अपने बयान में कहा, 'इंग्लैंड एंड वेल्स क्रिकेट बोर्ड इस बात की पुष्टि करता है कि मौजूदा जांच के चलते बेन स्टोक्स और गस अटकिंसन न्यूजीलैंड के खिलाफ दूसरे टेस्ट के लिए उपलब्ध नहीं होंगे। यह मुकाबला 17 जून से किया ओवल में खेला जाएगा। यॉर्कशायर के बैटर जो रूट टीम के अंतरिम कप्तान बनेंगे। ससेक्स के तेज गेंदबाज जोफ्रा आर्चर और एसेक्स के जॉर्डन कॉक्स को भी स्क्वाड में जोड़ा गया है।'

दूसरे टेस्ट के लिए इंग्लैंड का स्क्वाड

जो रूट (कप्तान), रेहान अहमद, जोफ्रा आर्चर, सोनी बेकर, शोएब बश्री, जैकब बेथेल, हैरी ब्रूक, जॉर्डन कॉक्स, बेन डकेट, मैश्यू फिशर, एमिलियो गे, जेम्स रियू, ओली रॉबिन्सन, जेमी स्मिथ, जोश टंग।



बोर्ड ने दी थी जांच की जानकारी

सोमवार को इंग्लैंड एंड वेल्स क्रिकेट बोर्ड (श्चक्क) ने कहा था कि नाइट क्लब में हुए मामले को लेकर कप्तान बेन स्टोक्स और तेज गेंदबाज गस अटकिंसन की जांच की जा रही है। पहले टेस्ट में इंग्लैंड के न्यूजीलैंड को 115 रन से हराने के बाद यह मामला सामने आया था। बोर्ड ने इस मामले पर बयान जारी किया था। बोर्ड ने कहा था, 'इसीबी अभी इस मामले में जांच कर रही है और पता लगा रही है कि टीम के प्रोटोकॉल (नियमों) का पहले टेस्ट मैच के बाद उल्लंघन हुआ है या नहीं।

बेन स्टोक्स और गस अटकिंसन इस मामले के दौरान नाइट क्लब में सोमवार की सुबह मौजूद थे। हम इस पर अधिक जानकारी जुटा रहे हैं। जब सभी पुख्ता जानकारी मिल जाएंगी उसके बाद ही इस मामले पर कोई अन्य अपडेट दिया जाएगा।' न्यूजीलैंड के खिलाफ पहले टेस्ट मैच में जीत के बाद कहा था, 'मुझे पता है कि अगर हम इस टेस्ट मैच को जीत नहीं पाते तो कितनी आलोचना होती। मैं अब अपने बॉयस के साथ अच्छे से बीयर पीना चाहता हूँ।'

ICC टेस्ट रैंकिंग

ब्रूक नंबर वन बल्लेबाज बने, भारतीय कप्तान गिल आठवें स्थान पर



नई दिल्ली। अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट परिषद (आईसीसी) द्वारा बुधवार को जारी पुरुष टेस्ट बल्लेबाजों की रैंकिंग में इंग्लैंड के कप्तान हैरी ब्रूक ने पहला स्थान हासिल किया है। ब्रूक ने साथी खिलाड़ी और इंग्लैंड के पूर्व कप्तान जो रूट को पछाड़कर पहला स्थान हासिल किया है। भारतीय कप्तान गिल को 2 स्थान का फायदा हुआ है। गिल आठवें स्थान

पर चले गए हैं। लॉर्ड्स में आईसीसी वर्ल्ड टेस्ट चैंपियनशिप मैच में न्यूजीलैंड के

खिलाफ इंग्लैंड की 115 रनों की जीत के दौरान पहली पारी में अर्धशतक लगाने के बाद ब्रूक नंबर एक स्थान पर आ गए। ब्रूक पहली बार दिसंबर 2024 में शीर्ष स्थान पर पहुंचे थे। मैच में पचास से अधिक रन बनाने वाले केवल दो खिलाड़ियों में से एक ब्रूक थे। ब्रूक ने पहली पारी में 56 रन बनाए थे। ट्रेविंस हेड दूसरे स्थान पर आ गए हैं। हेड को एक स्थान का फायदा हुआ है। जो रूट के लिए लॉर्ड्स टेस्ट अच्छा नहीं रहा था। दोनों पारियों में वह एक और आठ रन ही बना पाए थे। इसका उन्हें नुकसान हुआ है। रूट दो स्थान खिसकर पहले से सीधे तीसरे स्थान पर आ गए हैं। भारतीय कप्तान शुभमन गिल ने अफगानिस्तान के खिलाफ खेले गए एकमात्र टेस्ट में शतक लगाया था। इस शतक की बदौलत दो स्थान ऊपर चढ़कर वह आठवें स्थान पर आ गए। ऑस्ट्रेलिया के स्टीव स्मिथ चौथे स्थान पर हैं। श्रीलंका के

कामिंदु मेडिस एक स्थान उपर चढ़कर पांचवें स्थान पर चले गए हैं। न्यूजीलैंड के पूर्व कप्तान केन विलियमसन छठे स्थान पर हैं। उन्हें एक स्थान का नुकसान हुआ है। दक्षिण अफ्रीका के कप्तान टेंबा बवुमा सातवें स्थान पर हैं। भारत के यशसी जायसवाल नौवें स्थान हैं। उन्हें एक स्थान का नुकसान हुआ है। श्रीलंका के दिनेश चांदीमल एक पायदान उपर चढ़कर दसवें स्थान

पर चले गए हैं।



